RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

एकादश वर्ष, प्रथम अंक

मार्च - अप्रैल 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
01.	'मेघदूतम्' में वर्णित ज्योतिषशास्त्रीय विधान : एक अनुशीलन	प्रो. रञ्जन कुमार त्रिपाठी	05
02.	आधुनिक शिक्षा के निकष पर औपनिषदिक शिक्षण-विधियाँ	डॉ. रश्मि यादव	10
03.	श्रीमद्भागवतमहापुराण में भगवत् चेतना के विभिन्न स्तर-प्रासंगिक तुलना के आधार पर	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	16
04.	भारत में प्राकृतिक आपदाओं की समस्या : एक अनुशीलन	डॉ. अखिलेश कुमार	21
05.	संत चरणदास की अष्टांग योग में 'नियम साधना'	डॉ. कुलदीप	24
06.	सोशल मीडिया : महिला अधिकारों की प्राप्ति का नया अभियान	डॉ. सुनीता पारीक, डॉ. संजय कुमार	28
07.	श्रीमद्भागवत-महापुराण में वर्णित राजधर्म एवं राजा के गुण तथा इनकी प्रासंगिकता	डॉ. प्रणव कुमार	33
08.	आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की रचनाओं में वर्तमान सामाजिक समस्याओं का अवलोकन	डॉ. उष्मा यादव	38
09.	उपनिषदों में ऊंकार वर्णन	डॉ. हेमलता जोशी	43
10.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मधुमेह प्रबन्धन में यौगिक अभ्यास की उपयोगिता	अर्जुन सिंह जंघेला, डॉ. भावना श्रीवास्तव	47
11.	व्यावहारिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में योग दर्शन में वर्णित संतोष का महत्व	डॉ. भावना श्रीवास्तव, विश्व दीपक चंद्रोल	51
12.	श्री नरेन्द्र मोदी कार्यकाल में 15 अगस्त की नई योजनाओं और नीतियों में भूमिका (2014-2019)	डॉ. संजय कुमार, डॉ. सुनीता पारीक	54
13.	वैदिक वाङ्मय में नारी का स्वरूप	मधुस्मिता डेका	60
14.	वैदिकसाहित्य में सैन्य संगठन का स्वरूप	डॉ. मुनीश देवी, सीमा	63
15.	रामचरित मानस में मानव मूल्य	डॉ. मनोज उपर्ति, सुदेश कुमारी	66
16.	वैदिक साहित्य में वर्णित व्यापारिक एवं आर्थिक व्यवस्था	डॉ. संदीपा कालभोर	70
17.	संस्कृतसाहित्य में पाश्चात्य कवियों की भूमिका	डॉ. राजकुमार	73
18.	ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर को पहचानने की प्रक्रिया : एक गुणात्मक अध्ययन	उज़मा एजाज, डॉ. मुकेश कुमार चंद्राकर	76
19.	दूधनाथ सिंह के साहित्य में समाज में चित्रित जीवन मूल्य	डॉ. कविता चौधरी, वीनस	82
20.	चित्तशुद्धि में आर्य अष्टांगिक मार्ग की उपादेयता : एक दृष्टिकोण	नीलू विश्वकर्मा, डॉ. उपेन्द्रबाबू खत्री	84
21.	गांधी के विचारों में समावेशी विकास की अवधारणा : वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता	महेश जगोठा, कु० प्रीति	90
22.	न्यायमञ्जरी के अनुसार शब्द का गुणत्व साधन	डॉ. सन्तु सिंह	93
23.	ध्वनिकल्लोलिनी के आलोक में ध्वनिविरोधी मतों का अनुशीलन	सतीश नौटियाल	95
24.	रीतिकालीन कवि ठाकुर के काव्य में प्रेम का स्वरूप	डॉ. आशुतोष शर्मा	100
25.	वैदिक साहित्य में आत्म तत्व का स्वरूप	शुभम कुमार पाण्डेय	103
26.	आधुनिक समय में खिलाड़ियों के समग्र स्वास्थ्य में अष्टांगयोग की उपयोगिता	सतीश कुमार पंवार, डॉ. दीपक पाण्डेय	107
27.	योगकुण्डलिनी उपनिषद् एवं हठप्रदीपिका में वर्णित कुण्डलिनी जागरण के सहायक योगांग	रंजीत सिंह	111
28.	योग वासिष्ठ में ज्ञानयोग साधना	मनमोहन सिंह, प्रोफेसर (डॉ) सरस्वती काला	116
29.	दशम गुरु साहिबान पर प्रणीत संस्कृत काव्यों का सामान्य परिचय	दिशा	119
30.	महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान	डॉ. अनीता सिंह, लता शर्मा	124
31.	समकालीन भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में गाँधी दर्शन	कल्पना	128
32.	एक सांस्कृतिक पड़ताल : नाटककार भारतेन्दु	डॉ. पूनम शर्मा	132
33.	उर्वशी का कथालोक	डॉ. अर्चना गौड़	136
34.	वर्तमान शिक्षा में जैनदर्शन शिक्षणविधियों का प्रभाव	डॉ. डम्बरुधर पति	142
35.	नारी सह-शक्तिकरण : मानवीय मूल्य	डॉ. मुनीश देवी, डीम्पल	144
36.	योग दर्शन में प्राणायाम की उपयोगिता	डॉ. सुभाष चन्द सैनी, सुमन	147
37.	मीमांसाभाष्यानुमत कारकतत्त्वविमर्श	राहुल आर्य	149

ISSN 2278 - 0327

38. भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ	अनुराधा शर्मा	152
39. कोविड – 19 से बचाव तथा उपचार में योगाभ्यास की भूमिका	निधि शुक्ला	156
40. भारत के पड़ौसी देशों से सम्बन्ध (1920–30 अभ्युदय के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. आशा यादव	159
41. कुण्डलिनी शक्ति का हठयोगिक ग्रंथों के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन	रिंकू, अंजू बाला	164
42. स्वामी श्रद्धानंद जी व आर्य समाज के पारस्परिक संबंधों का ऐतिहासिक वर्णन	अर्चना, डॉ. आशा यादव	169
43. शाब्दबोध तथा उसकी प्रक्रिया : एक अध्ययन	भास्कर उप्रेती	174
44. प्रयोगवाद तथा नयी कविता	डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्र	176
45. राष्ट्रीय एकता का प्रतीक : संगीत	दर्शना, डॉ. जितेंद्र मलिक	179
46. पर्यावरण संरक्षण के ज्योतिषीय व राजनीतिक उपाय	डॉ. अर्चना चौहान	183
47. पाठ्यचर्या का भारतीय स्वरूप और शिक्षा पद्धति	डॉ.अनूप कुमार पाण्डेय	187
48. राजस्थानीय संस्कृत कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री विवेचन	श्यामलाल उदेनिया	192
49. बागवानी क्षेत्र का महत्व	किरण कुमारी	197
50. वेदों में जल विज्ञान	डॉ. सुमन रानी	201
51. गङ्गा चिन्तन – 'रक्षत – गङ्गाम्' महाकाव्य के आलोक में	डॉ. ऋचा	205
52. उपनिषदों में वर्णित प्रणव (ओ3म्) की उपयोगिता	डॉ. सपना यादव	209
53. स्वातंत्र्योत्तर भारत के हिन्दी उपन्यास : स्त्री विमर्श के संदर्भ में	सरिता पारीक	211
54. आधुनिक जीवन में 'श्रीरामचरितमानस' की भूमिका	ममता रयाल, प्रो. कंचन जोशी	215
55. संत साहित्य में सामाजिक विकृतियों के विरोध की सार्थकता	मोनिका	219
56. राजगढ़ जिले के छात्रों की समायोजन क्षमता एवं बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	अश्वनी कुमार, डॉ. ऋतु शेखर	223
57. म.प्र. एवं केन्द्रीय बोर्ड के विद्यार्थियों के जीवनमूल्यों के विकास में संचार के साधनों का अध्ययन	नीतू जैन, डॉ. वीरेन्द्र जैन	228
58. 'योगवासिष्ठ' में योग साधना की आधार भूमि 'कर्मयोग'	महेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. गणेश शंकर	234
59. सत्यपाल शर्मा विरचित लौहपुरुषवल्लभचरितम् में वल्लभ भाई पटेल का चारित्रिक विश्लेषण	डॉ. सुनीता सैनी, सुरुचि	238
60. डॉ. उषा यादव रचित कहानी संग्रह 'वह एक पल' की भाषिक संरचना	डॉ. कृष्णा देवी, जितेंद्र शर्मा	242
61. सविनय अवज्ञा आंदोलन में प्रमुख मस्लिम महिलाएं	सविता, डॉ. आशा यादव	246
62. हिन्दी कहानी और आन्दोलन	डॉ. कविता चौधरी, उषा	250
63. भास एवं कालिदास–कालीन समाज में नारी की स्थिति	डॉ. श्री भगवान, सरतुल कुमारी	253
64. चम्पूभारतम् में सादृश्यमूलक अर्थालङ्कार विमर्श	राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा	256
65. छत्रपति शाहू की दृष्टि में शिक्षा ही प्रगति का आधार	डॉ. ज्योति सिंह गौतम	260
66. योग दर्शन में मनोरोगों का अवधारणा : एक परिचय	दिलिप कुमार रजक, श्रीकान्त,डॉ. नीबू आर. कृष्णा, डॉ. मोरध्वज सिंह	266
67. शाम्भवी मुद्रा का विद्यार्थियों के तनाव पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	आकाश प्रसाद कोटनाला, डॉ. मोनिका रानी	270
68. टोडरशाह : गोंड रियासत मकड़ाई के अंतिम शासक	डॉ. बी.सी. जोशी, श्रीमति दीपशिखा चौधरी	275
69. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'यज्ञ द्वारा' पर्यावरण समीक्षा	मिथलेश झा	277
70. आधुनिक जीवन में कर्म योग की उपयोगिता	पूजा, डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद रयाल	281
71. इक्कीसवीं सदी : दाम्पत्य और बदलता पारिवारिक परिवेश	रीना	285
72. संत गरीबदास के साहित्य में भक्ति भावना	पुष्पा	288
73. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों का एक अध्ययन	सुशील दत, डॉ. सोनिका	291
74. इतिहास में गोंड रियासत मकड़ाई (1535–1948)	श्रीमति दीपशिखा चौधरी, डॉ. बी.सी. जोशी	297
75. बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य : भारत–पाकिस्तान संबंधों का अध्ययन	प्रदीप कुमार, डॉ. शर्मिला लोचब	300
76. हिंदी साहित्य में आदिवासी लेखन	पूजा	303
77. भारत में घरेलू कामगार महिलाओं की दशा एवं दिशा	डॉ. विकास शर्मा, डॉ. पुष्पा मिश्रा	306
78. अथर्ववेद का भूमिसूक्त : काव्य रूप और पर्यावरण विचार	डॉ. अर्णव पात्र	310

ISSN 2278 - 0327

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर को पहचानने की प्रक्रिया : एक गुणात्मक अध्ययन

उज़मा एजाज
शोध छात्रा, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. मुकेश कुमार चंद्राकर
सहायक प्राध्यापक, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सारांश

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर विकास से संबंधित एक विकलांगता है जो कि बच्चों के सामाजिक, व्यावहारिक एवं संप्रेषण कौशल को कई तरीकों से प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विश्व स्तर पर 160 में से 1 बच्चे को ऑटिज्म होता है। यह एक ऐसी विकृतियों का समूह है जिसमें विकास के एक या एक से अधिक क्षेत्र प्रभावित होते हैं। इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर एवं स्ट्रोक के अनुसार अनुवांशिक या पर्यावरण दोनों ही ऑटिज्म की संभावना को निर्धारित करते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन बच्चों में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर को पहचानने की प्रक्रिया पर आधारित है। इस शोध अध्ययन में शोध प्रविधि के रूप में साक्षात्कार को अपनाया गया है। न्यादर्श के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य के शिशु रोग विशेषज्ञों, शासकीय अस्पताल में पदस्थ मनोवैज्ञानिकों एवं निजी क्षेत्र में कार्य कर रहे मनोवैज्ञानिकों, मनोरोग विशेषज्ञों, जिला पुनर्वास केंद्र संयोजक एवं थैरेपिस्ट को चयनित किया गया है। इन विशेषज्ञों का चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श प्रविधि के द्वारा किया गया। शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग करते हुए प्रदत संकलित किए गए। प्रदत्त विश्लेषण हेतु विषय वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर से पीड़ित बच्चों की पहचान करना, जल्द से जल्द उचित हस्तक्षेप शुरू करना बहुत महत्वपूर्ण है। सामान्यतौर पर सबसे पहले माता-पिता के द्वारा ही अपने बच्चों में असामान्य व्यवहार की पहचान की जाती है तत्पश्चात् लक्षणों के आधार पर मनोवैज्ञानिकों की सलाह, थैरेपिस्ट की सुविधाएं तथा पुनर्वास केंद्रों की सेवाओं के माध्यम से बच्चे को सामान्य करने की कोशिश की जाती है।

प्रस्तावना

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर मस्तिष्क का विकार है जिसमें मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र एक साथ काम करने में विफल हो जाते हैं इसलिए इसे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर कहा जाता है। ऑटिज्म से ग्रसित बच्चे बाकी बच्चों से अलग सुनते, देखते और महसूस करते हैं। सभी ऑटिस्टिक बच्चों को कुछ ना कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, कुछ बच्चों को सीखने से संबधित, कुछ को मानसिक स्वास्थ्य संबधित समस्या तथा कुछ को व्यवहार संबंधी समस्याएं हैं (अमेरिकन ऑटिज्म सोसायटी, 2011)। इस शब्द का उपयोग सबसे पहले ब्लूर्ले ने 1911 में मानसिक विकृति स्कीजोफ्रीमियां के रोगियों में पाए जाने वाले सामाजिक संबंधों में उपस्थित कमी के लक्षण को संबोधित करने के लिए किया, लेकिन इसका वैज्ञानिक अध्ययन लियो कैर्न ने 1943 में एवं हंस अस्पेर्गेर ने 1944 में किया। वर्तमान में इस शब्द का उपयोग बच्चों में पाए जाने वाले विकासात्मक विकृति के लिए किया जाता है। सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल एवं प्रिवेशन (2014) के अनुसार अभी तक ऑटिज्म की कोई दवाई नहीं बनी है इसलिए डॉक्टर ऐसी दवा लेने की सलाह देते हैं जो ऑटिज्म से ग्रसित बच्चे को सामान्य जीवन जीने में मदद कर सकती है। इन दवाइयों के साथ-साथ थेरेपी की मदद से भी इसके लक्षणों को कम किया जा सकता है। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर पूरी दुनिया में फैला हुआ है, भारत में प्रति वर्ष ऑटिज्म के एक मिलियन से अधिक मामले सामने आते हैं। ऑटिज्म से ग्रसित बच्चों के मस्तिष्क की संरचना विशेषकर अग्रपाली, पैराइटल तथा मध्य मस्तिष्क की संरचना में दोष मुख्य रूप से देखने को मिलता है। इन संरचनाओं में दोष के कारण ऐसे बच्चों के व्यवहार, संवेग एवं संज्ञानात्मक